National Journal of Research and Innovative Practices (NJRIP)
Vol-6, Issue-6, 2021; ISSN No. : 2456-1355; Web: www.edusanchar.com

# शोध-पत्र

## शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता

**शोधकर्ता**

**सुरेन्द्र कुमार शर्मा**

**मार्गदर्शिका**

**डॉ. सावित्री सिंगवाल**

**शोध पर्यवेक्षिका**

**केरियर पॉइन्ट विविद्यालय, कोटा**

**''अधिकारपदम् प्राप्य नोपकारम् करोतीयः।**

**अकारो लुप्यते तत्र ककारो द्वित्वताम् व्रजेत।''**

बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा एवं भौतिकता के कारण मानव को मानव कम तथा अन्य कुछ अधिक समझे जाने से मर्माहत पश्चिमी जगत में मानव को मिलने वाले अधिकारों के प्रति जो जागरूकता प्रदर्शित की जा रही है वह सर्वथा नवीन नहीं कही जा सकती है। विश्व में सबसे पहले मानव धर्म का प्रादुर्भाव हुआ। संत–महात्माओं ने कहा है कि– ''मानव, मानव की सेवा करे यही धर्म है।''

इन्हीं अवधारणाओं से मानवाधिकारों की शुरुआत हुई। वर्तमान में मानवाधिकारों की बुलन्द हो रही आवाज़ के पीछे यही पृष्ठभूमि काम कर रही है। मानव के अधिकारों का जन्म इसी धारणा से हुआ है कि व्यक्ति समाज में प्रेम एवं सहयोग से रहें। मानवाधिकार तो मूलतः मानव जाति को मिले या दिए जाने वाले अधिकारों से

सम्बन्धित है जिसकी जड़े बेनीलोन, असीरिया और प्राचीन यूनान तक फैली हुई है। भारत में प्राचीनकाल से ही मानवाधिकारों को महत्त्व मिलता रहा है।

## शोध अध्ययन के उद्देश्य

(i) कोटा विश्वविद्यालय कोटा के बी.एड प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

## शोध परिकल्पना

1. क्या कोटा विश्वविद्यालय कोटा के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थी **मानवाधिकारों** के प्रति जागरूक है।
2. क्या कोटा विश्वविद्यालय कोटा के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों में **मानवाधिकार के विषय में सामान्य जानकारी** के प्रति जागरूकता है।
3. क्या कोटा विश्वविद्यालय कोटा के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों में **मानवाधिकारो के संवैधानिक प्रावधान** के प्रति जागरूकता है।
4. क्या कोटा विश्वविद्यालय कोटा के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के **मौलिक अधिकार के संवैधानिक अनुच्छेद** के प्रति जागरूकता है।

5. क्या कोटा विश्वविद्यालय कोटा के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों में मानवाधिकारों की **सामान्य जागरूकता (मानवाधिकार सम्बन्धित)** के प्रति जागरूकता है।

6. क्या कोटा विश्वविद्यालय कोटा के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के **शैक्षिक कार्यक्रम (मानवाधिकार सम्बन्धित) के** प्रति जागरूकता है।

## शोध अध्ययन का परिसीमन

(1) शोध कार्य कोटा संभाग तक सीमित रखा गया है।

(2) शोधकार्य हेतु 10 शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों तक ही सीमित रखा गई।

(3) शोधकार्य के लिए न्यादर्शो की संख्या 740 रखी गई।

**शोध हेतु सोद्देश्य न्यादर्श का चयन विधि से किया गया है–**

(1) शोधकार्य हेतु 10 शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन किया गया है।

(2) शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से प्रत्येक में से 70 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में समस्या की प्रकृति, उपयोगिता रुचिकर क्षेत्रों को देखते हुए आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि (Normative Survey Method) का प्रयोग किया गया है।

## शोध उपकरण

*मानवाधिकार जागरूकता के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया।*

## सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध में **'प्रतिशत'** प्रविधि का प्रयोग किया गया।

## शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने उपरोक्त बातों को ध्यार में रखते हुए निष्कर्षों का प्रस्तुतीकरण किया है–

1. प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त निष्कर्ष

शोधार्थी द्वारा निर्मित प्रश्नावली को क्षेत्र में बांटकर **प्रशिक्षणार्थियों** की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का विश्लेषण प्रस्तुत किया। जिसके निष्कर्ष निम्नवत है–

### शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता से प्राप्त निष्कर्ष

कोटा विश्वविद्यालय कोटा के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी मानवाधिकारों के प्रति जागरूक है। औसतन 72.20 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी पूर्ण रूप से जागरूक पाए गए जबकि 27.80 प्रतिशत आंशिक रूप से जागरूक पाए गए।

## वर्तमान में प्रासंगिकता–

वैदिककालीन शिक्षा पद्धति से लेकर वर्तमान शिक्षा पद्धति में काफी परिवर्तन हो गया है। वर्तमान समय में विद्यार्थी विभिन्न उपाधियाँ (Digrees) तो प्राप्त कर रहे है, परन्तु वास्तव में आज भी विद्यार्थी शिक्षित होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है। एक व्यक्ति को अधिकार प्राप्त है, किन्तु वह अपने अधिकारों का सही उपयोग करना नहीं जानता एक व्यक्ति के अधिकार दूसरे व्यक्ति द्वारा छिने जा रहे है, परन्तु वह अपने अधिकारों के प्रति उदासीन है। ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो तभी मानवाधिकारों की सुरक्षा संभव है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ –

कौल, लोकेश (1998). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली. दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाऊस।

मीना, डॉ जनक सिह (2010) भारत में मानव अधिकार और महिलाऐं : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

पाण्डेय, डॉ रामशकल (2009) शिक्षा के मूल सिद्धान्त : विनोद प्रस्तक मन्दिर, आगरा

**JOURNAL**

Asian Journal Of Multidisciplinary Studies

Educatinal Reasarch Review

Indian Education : National Council Of Educational Reasarch And training.

**WEBLIOGRAPHY-**

http://shodhganga.com

http://abstract.com

http://uok.in